Today's Poem – 24.05-2014

बाप कभी किसी पर नाराज़ नहीं होते

हमेशा शिक्षा देते

यह संगम का समय है बेस्ट

इसलिए नहीं करना है टाइम वेस्ट

विकर्म विनाश कर स्वयं को सुधारने के लिए याद की यात्रा पर पूरा अटेन्शन देना है

दैवीगुण धारण करने हैं

देवता बनने के लिए संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ करना है

गफ़लत में अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है

बाप समान अव्यक्त वा विदेही बनना

यही है अव्यक्त पालना

एक बाप दूसरा ना कोई

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!